श्लोक संख्या -21   20-7(जुलाई)-2020

"वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम।
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम॥"

हिन्दीअनुवाद - हे पार्थ (पृथापुत्र) अर्जुन ! जो पुरुष इस अविनाशी, नित्य, अजन्मा तथा निर्विकार आत्मा को जानता है, वह आत्मज्ञ पुरुष किसप्रकार किसी को मरवाता है तथा किसको मारता है?

भावार्थ - (शाङ्करभाष्य के आश्रय से)

~~आत्मा कोई~~ ~~आत्मा कर्ता~~ आत्मज्ञान धारण करनेवाला पुरुष किसीभी प्रकार के कर्म का सम्पादन नहीं करता है तथा किसीको कर्मकरने के लिए प्रेरित भी नहीं करता है।

आत्मज्ञानी पुरुष की परिभाषा

(क) आत्मा तथा अनात्मा के भेद का ज्ञान इस पुरुष के पास रहता है।

(ख) इस भेद के ज्ञान के आश्रय से बुद्धि से परमार्थ रूप से विकार रहित ~~आत्मा~~ पुरुष आत्मज्ञ अथवा आत्मज्ञानी कहलाता है।

(ग) जो तत्त्व को जाननेवाला पुरुष है। आत्मज्ञानी की धारणा यह है कि मैं कर्मों का कर्त्ता नहीं हूं। कर्मों का संपादन प्रकृति द्वारा होता है। वह मन से सकलकर्मों से तटस्थ होकर अपने में संतुष्ट रहता है।

"तत्त्ववित्तु नाहं करोमि।"